(IJTBM) 2026, Vol. No. 16, Issue No. I, Jan-Mar **e-ISSN: 2231-6868 p-ISSN: 2454-468X**

मुजफ्फरपुर जिला (साहेबगंज प्रखण्ड) के अर्ध–मध्यम जोत वाले किसान एवं उसके उत्पादकता के बीच संबंध का एक विश्लेशनात्मक अध्ययन

An Analytical Study of the Relationship Between Semi-Medium Landholding Farmers and their Productivity in Muzaffarpur District (Sahebganj Block)

***Manoj Kumar, **Dr Sharda Nand Sahni**
*Research Scholar, Department of Economics, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, Bihar
**Research Guide, Assistant Professor, Rameshwar College, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, Bihar

DOI:10.37648/ijtbm.v16i01.001

[1]*Received: 12 November 2025; Accepted: 19 December 2025; Published: 06 January 2026*

Abstract

The economy of Bihar is mainly based on agriculture. Muzaffarpur district is considered an important area for agricultural diversity as well as for the production of agricultural crops. The agricultural structure here comprises different types of farmers with different sizes of cultivable land holdings, among which semi-medium farmers (2-4 hectares) represent a particularly important category in terms of agricultural crop production, investment, technology adoption and marketing arrangements. The present research article analyzes the role of semi-middle-class farmers in Muzaffarpur district. Studies have shown that this class plays a vital role in agricultural production, crop diversification, technology transfer, market participation, and employment generation in the rural economy. Although challenges like rising agricultural costs, lack of marketing facilities, shortage of education facilities and absence of warehousing system are faced, semi-middle farmers play a crucial role in maintaining the agricultural growth rate of the district and strengthening the rural economy. This study can prove useful in agricultural policy making and local development planning.

Keywords: *Agricultural development; semi-medium land; technology; economic development; agricultural productivity; farmer classification*

सार–

बिहार की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। मुजफ्फरपुर जिला को कृषि विविधता तथा साथ ही साथ कृषि फसलो के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता हे। यहाँ की कृषि सरंचना में विभिन्न प्रकार के किसान कार्यरत है जिनके कृषि योग्य भूमि के जोतों का आकार अलग– अलग है जिनमें अर्ध मध्यम जोत वाले किसान (2–4 हेक्टेयर) की भूमि में कृषि फसल का उत्पादन निवेश, तकनीकि अपनाने एवं विपणन व्यवस्था के संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत शोध लेख मे मुजफ्फरपुर जिले में अर्ध– मध्यम किसानो की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि कृषि उत्पादन, फसल विविधिकरण

[1] ***How to cite the article:*** Parashar S. (January 2026); An Appraisals of Economic Environment and Business Environment in India; *International Journal of Transformations in Business Management,* Vol 16, Issue 1, 1-10, DOI: http://doi.org/10.37648/ijtbm.v16i01.001

(IJTBM) 2026, Vol. No. 16, Issue No. I, Jan-Mar e-ISSN: 2231-6868 p-ISSN: 2454-468X

तकनीकी हस्तांतरण, बाजार सहभागिता एवम् ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के क्षेत्र में इस वर्ग का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यद्यपि कृषि लागत में वृद्धि, विपणन सुविधाओं की कमी, सिंचाई सुविधाओ की कमियाँ तथा भण्डारण व्यवस्था के अभाव जैसी चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, फिर भी अर्ध मध्यम किसान इस जिले के कृषि विकास दर को स्थिर बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं तथा ग्रामीण आर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं। यह अध्ययन कृषि नीति– निर्धारण और स्थानीय विकास योजना निर्माण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द – कृषि विकास, अर्ध– मध्यम जोत, तकनीक, आर्थिक विकास कृषि उत्पादकात, किसान वर्गीकरण।

1. परिचय (INRODUCTION):–

भारत की अर्थव्यवस्था मे कृषि का योगदान ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए स्वतंत्र भारत में सर्व प्रथम कृषि को मजबूत करने का लक्ष्य प्रथम पंचवर्षीय योजना में रखा गया था। यह लक्ष्य पूरा भी हुआ। वर्तमान समय में भी देश की लगभग 60ः जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि के क्षेत्रों में रोजगार पाते हैं। बिहार राज्य का विशेषतः उत्तरी बिहार का भू– भाग कृषि उत्पादन तथा साथ ही साथ प्राकृतिक संसाधन जो कृषि फसलों के लिए अनुकूल होता है। कृषि फसलों के दृष्टि से समृद्ध माना जाता है। मुजफ्फरपुर जिला इसी क्षेत्र का प्रमुख कृषि केन्द्र है। यहाँ की मिट्टी कृषि फसलों के लिए पूर्ण रूप से अनुकूलित है। यहाँ पर उर्वर मिट्टी, जलोढ़ तथा दोमट मिट्टी, उपयुक्त जलवायु, सिंचाई की उपलब्धता और श्रमशक्ति की मौजूदगी के कारण कृषि विविधता का विकास हुआ है।

कृषि विकास के अध्ययन में ''जोत का आकार'' एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। उत्तर बिहार में जोतों के आकार में असमानता, कृषि उत्पादकाता, निवेश क्षमता तकनीक को अपनाने और बाजार सम्पर्क की सम्भवनाओं को प्रथावित करती है। सीमान्त किसान मुख्य रूप से जीवन– निर्वाह स्तर की खेती तक सीमित रहते है, बड़े किसान संसाधनो की उपलब्धता के कारण व्यवसायिक खेती में अधिक सक्रिय रहते है। इन दोनो के मध्य स्थित अर्ध मध्यम जोत वाले किसान कृषि विकास का संतुलित एवम् उत्पादक वर्ग माने जाते है।

जहाँ तक मुजफ्फरपुर जिले की बात है तो यहाँ के सीमान्त किसान जीवन– निर्वाह के लिए कृषि फसल का उत्पादन करते है, और बड़े किसान बहुत ही कम जोत में कृषि फसलों को उगाते हैं, शेष जोत के आकार को बँटाई या पट्टे पर लगाते है नही तो पड़ति छोड़ देते हैं। परन्तु इन दोनो के मध्य जिन किसानो के पास (2–4) हेक्टेयर के बीज जोत की भूमि उपलब्ध है वह किसान अपनी कृषि कार्य स्वयं करते हैं, बहुत ही विषम परिस्थिति में कृषि मजदूरों को रखते है। अर्ध– मध्यम् जोतवाले किसानों का प्रयास रहता है कि कृषि कार्य स्वयं करें तथा साथ ही साथ ये कृषि फसलों का उत्पादन बड़े किसानों की अपेक्षा अधिक करते है। ये अर्ध मध्यम किसान प्रति हेक्टेयर अधिक उत्पादकता सीमान्त एवम् बड़े किसानों की तुलना में करते है। मुजफ्फरपुर जिले के कृषि विकास मे इस वर्ग का विशेष स्थान है। यह वर्ग न तो अत्यंत छोटा होता है और नही तो बहुत बड़ा होता है जिससे निवेश क्षमता बाधित हो।

अतः कृषि उत्पादन, तकनीकी आधुनिकीकरण तथा बाजार आधारित फसल प्रणाली के विकास में तथा साथ ही साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अर्थ– मध्यम किसानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रस्तुत शोध लेख में मुजफ्फरपुर जिले के संदर्भ में इस वर्ग की वास्तविक स्थिति, उत्पादन विपणन व्यवहार एवम् विकासगत बाधाओं का तथा साथ ही साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान की स्थितियों का विश्लेषण किया गया है।

1. साहित्य समीक्षा (LITERATURE REVIEW)

कृषि विकास एवम् जोत आकार के संबंध पर अनेक विद्वानों ने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किए है जो निम्न प्रकार है:–

- चन्द्रकांत एवं पांडेय (2016) के अध्ययनों में पाया गया कि जोत का आकार किसानों की निवेश क्षमता एवम् कृषि उत्पादकता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।
- कृषि जनगणना (2015–16) के अनुसार भारत में अर्धमध्यम किसान कुल किसानों का लगभग 14: है परन्तु कृषि उत्पादन में 30–40: योगदान पाया गया है।
- नंदन (2020) के अनुसार अर्ध– मध्यम किसान नवाचार और तकनीकी अपनाने में अग्रणी भूमिका निभाते है।
- बिहार आधारित अध्ययनो में रंजन (2019) में पाया कि मुजफ्फरपुर और इसके आस–पास के क्षेत्रों में सब्जी उत्पादन, लीची बागवानी और धान, मक्का फसल प्रणाली में अर्ध मध्यम किसानों का योगदान सर्वाधिक है।
- केन्द्रीय कृषि मंत्रालय की रिर्पोट में यह संकेत मिलता है कि कृषि विपणन में सीधे किसानों की भागीदारी बढ़ाने में अर्ध– मध्यम जोत वाले किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- 21 वीं सदी के राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़े बताते है कि भारतीय कृषि में छोटी जोते जो अभी भी बड़ी जोतों की तुलना में अच्च उत्पाकता प्रदर्शित करती है तथा साथ ही साथ कृषि विकास में अपनी अहम भूमिका प्रदर्शित करती है।
- अर्थशास्त्री मार्क रोसेनजेबग ने 2022 में ¬–यू आकार का संबंध बताए है:–

2. उद्देश्य (OBJECTIVE):–

इसके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषि विकास को सशक्त करने में जोतों के आकारों का उपयुक्त तथा निशचित आकार का विश्लेषण करना।

- कृषि विकास में अर्ध मध्यम जोत बाले किसानो की भूमिका का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अर्ध– मध्यम जोत वाले किसानों की योगदान का व्याख्या करना।
- अर्ध– मध्यम जोतवाले किसानों द्वारा कृषि फसलो की उत्पादकता का स्पष्टीकरण करना।

3. अध्ययन विधि:–

प्राथमिक आंकड़ो का संकलन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोध कार्य को पूरा करने के लिए "ड।च्प्छळ त।छक्व्ड डम्ज्भ्व् द्वारा शोध क्षेत्र मुजफ्फरपुर जिले के साहेबगंज प्रखण्ड के 15 गाँवो के लगभग 50 किसानों से प्राथमिक समंक संकलन किया गय है जो इस प्रकार है:–

- सर्वे वर्ष 2024–2025

किसान का नाम	जोत की आकार (हेक्टेयर में)	गेहूँ का उपज (किन्ट्रल में)
1.विष्णु प्रकाश	4 हेक्टेयर से उपर	30
2.यादोलाल राय	2–4	80

3.बिजय लाल	*4 हेक्टेयर से उपर*	*40*
4.देवेन्द्र पाण्डेय	*4 एकड़ से उपर*	*32*
5.नैनू सिह	*10 एकड़ से उपर*	*40*
6.सत्येन्द्र ठाकुर	*10 एकड़ से उपर*	*38*
7.कैलाश सिंह	*24 एकड़ से उपर*	*80*
8.मोहन चौधूर	*2–4 एकड़ से उपर*	*75*
9.लखिन्द्र चौधूर	*2–4 एकड़ से उपर*	*78*
10.लखिन्द्र भगत	*2–4 एकड़ से उपर*	*82*
11.अकल भगत	*1–2*	*28*
12.सुबोध तिवारी	*1 से कम*	*16*
13.नन्दकिशोर साह	*2–4*	*64*
14.नेमी चन्द्र	*2–4*	*69*
15.लाट बहादूर राय	*1 से कम*	*20*
16.मोहन सिंह	*2–4*	*82*
17.बैद्यनाथ सिंह	*4 हेक्टेयर से उपर*	*62*
18.तेजन सिंह	*10 हेक्टेयर से उपर*	*39*
19.हरिकिशोर ठाकुर	*2–4*	*68*
20.बिगन सिंह	*1 से कम*	*22*
21.बिपिन सिंह	*1 से कम*	*24*
22.ललित यादव	*2–4*	*80*
23.हरिचन्द्र महतो	*3–5*	*82*

24.काली सिंह	*1 से कम*	*12*
25.पंकज चौधरी	*10 से उपर*	*46*
26.भोला सिंह	*10 से उपर*	*52*
27.बहादूर सिंह	*4–6*	*59*
28.महेन्द्र सिंह	*8–10*	*52*
29.रामबाबू राय	*2–4*	*72*
30.नरेन्द्र सिंह	*10 एकड़ से उपर*	*40*
31.रोहित सिह	*10 एकड़ से उपर*	*55*
32.अरूण सिंह	*10 एकड़ से उपर*	*52*
33.बिहारी सिंह	*(6–8) एकड़*	*68*
34.नन्दू साह	*2–4*	*70*
35.लालदेव राय	*2–4*	*74*
36.बिपिन यादव	*3–5*	*80*
37.नीरज यादव	*4–6*	*66*
38.सरोज यादव	*2–4*	*78*
39.शम्भू यादव	*1–2*	*20*
40.परेखी देवी	*1–2*	*25*
41.कौशल्या देवी	*4–6*	*55*
42.सिपाही राय	*2–4*	*60*
43.सरोज साह	*2–4*	*72*
44.मोहन ठाकुर	*1 से कम*	*12*

45.गकार मियां	2–4	66
46.नेजामुद्दीन	2–4	78
47.रामस्वरूप राय	2–4	68
48.बालदेव राय	2–4	82
49.रामजन्म राय	2–4	78
50.दिनेशचन्द्र यादव	10 से उपर	55
51.भोला सहनी	6–8	82

उत्पादन क्विंटल में

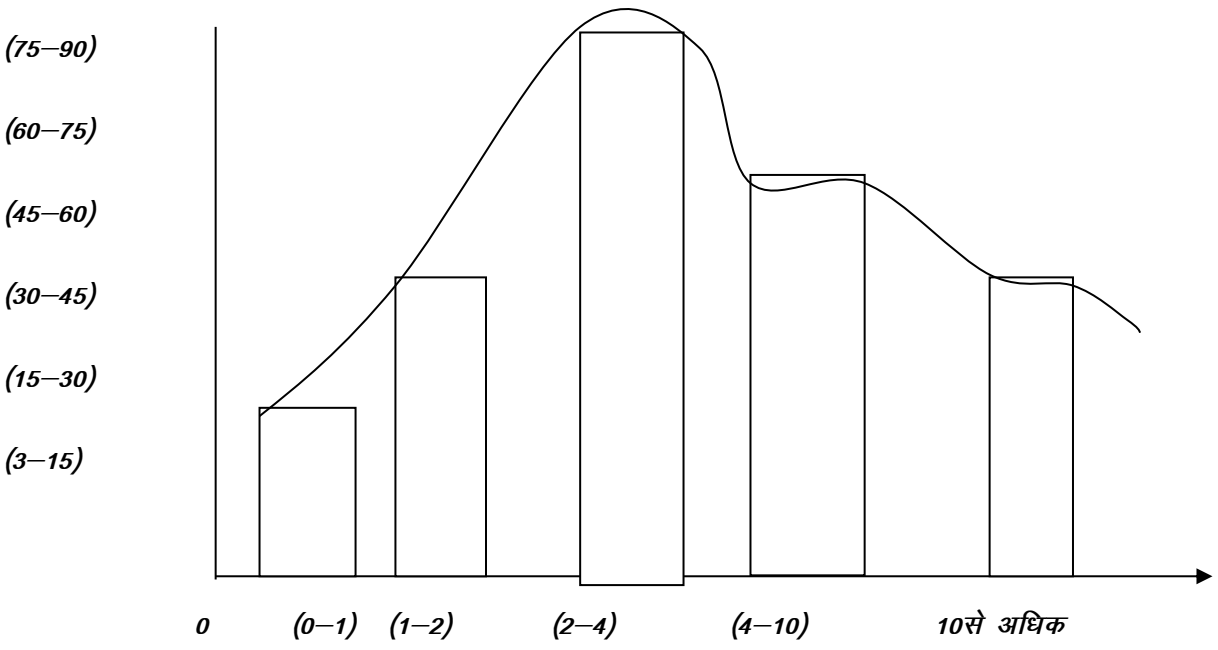

(चित्र सं0 01) (जोत का आकार हेक्टेयर में)

प्राथमिक आकड़ो का हमने चित्र संख्या– 1 के माध्यम से गेहूँ फसलों के उत्पादन एवम् उत्पादकता के संबंध में जो हमने प्रश्नावली, साक्षात्कार के माध्यम से च्तपउंतल कमजं को संकलन किया है, उन सभी डेटा को सम्मिलित रूप में चित्र संख्या 01 में दर्शाने का प्रयास किया है। च्तपउंतल क्मजं व चित्र संख्या– 01 से स्पष्ट हो रहा है कि जिस किसान के पास अधिक जोतों का आकार वाले भूमि उपलब्ध है यानी बड़े किसान है तो वे प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन कर रहे है अर्थात जिनके पास भूमि अधिक है तो वह भी प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन कर रहे है। (परंतु यह एक

सीमा तक निर्धारित है) ठीक वैसे किसान जिनके पास बहुत कम भूमि उपलब्ध है वे भी बहुत कम उत्पादन कर रहे है जिन्हे सीमान्त किसान कहते है। यह लोग कृषि कार्य जीवन निर्वाह के लिए करते है। ठीक इसके विपरीत बड़े किसान जो अधिक मात्रा में भूमि उपलब्ध रहता है वे किसान कृषि कार्य स्वयं नही करते है। उन्हे कृषि कार्य करने की समर्थता से अधिक भूमि उपलब्ध रहता है, वह अपनी समर्थानुसार जोत के आकार पर कृषि फसलों को उगाते है, शेष जोतो के आकार को बँटाई या पट्टे पर लगा देते है, कभी – कभी पड़ति भी छोड़ देते है जिससे कृषि योग्य भूमि का कृषि फसलों के लिए उपयोग नही होना भी उत्पादकता को प्रभावित करता है। कहने के लिए तो बड़े किसान हैं परंतु कम ही भूमि पर कृषि फसलों को उगाने में सक्षम होते है। जो अतिरिक्त भूमि रहता है उसको बँटाई या पट्टे पर लगाते है, तो उस भूमि पर बटाईदार किसानों का कृषि फसलों के संबंध में पूर्ण अधिकार नही रहता हैं जिससे वह किसान बेवस व हतोत्साहित होकर कृषि फसलों को उगाते है जिसका परिणाम कृषि फसलों के उत्पादन व उत्पादकता पर नकारात्मक रूप से होता है। जब कृषि फसलों के स्वामि ही हतोत्साहित होकर कृषि कार्य करेंगे तो कृषि के विकास की कल्पना करना सही नही होगा। मेरे शोध विषय का अध्यन क्षेत्र मुजफ्फरपुर के साहेबगंज में कृषि योग्य भूमि की स्वामि के संबंध में अधिक असमानता है। किसी किसान के पास अधिक जमीन है तो किसी के पास बहुत ही कम जमीन है। यहा सबसे अधिक सीमान्त किसानों की संख्या है जो मात्र कृषि कार्य को जीवन निर्वाह के लिए करते है। बाकी समय में वे बाहर के प्रदेशों में मजदूरी करने के लिए चले जाते है। कुछ किसानो के पास इतनी कम जोत के आकार वाली भूमि है कि उन्हे कृषि फसलों को या कृषि कार्य करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति में वे खेतों को बेंचने या पड़ति छोड़ने को मजबूर हो जाते है और वे पलायन कर किसान से मजदूर बन जाते है। जिन– जिन किसानों ने ऐसी परिस्थितियों से गुजर रहे है उनसे कृषि विकास की कल्पना करना असंभव होगा।

अतः इस शोध विषय का अध्ययन क्षेत्र मुजफ्फरपुर जिले के साहेबगंज प्रखण्ड है जहाँ से प्राथमिक समंक संकलन किया गया है तथा साथ ही साथ इस समंक को एक चित्र के द्वारा दर्शाया गया है। उससे पूर्ण रूप से स्पष्ट हो रहा है कि जो किसान अर्ध– मध्यम जोत वाले किसान है, वह प्रति हेक्टेयर में अधिक उत्पादन व उत्पादकता गेहूँ के फसलों में कर रहे है। इसका सबसे मुख्य कारण यह है कि अर्ध– मध्यम किसान कृषि के तकनीको को भरपूर मात्रा में उपयेग करते है तथा साथ ही साथ बाहरी क्षेत्रों से पूंजी का निवेश कृषि फसलों के उत्पादन में करते है जिसका परिणाम सकारात्मक रूप में उत्पादन एवम् उत्पादकता में होता है। तथा साथ ही साथ इनके पास श्रमशक्ति भी मौजूद रहता है जिसका उपयोग कृषि फसलों के उत्पादन में करते हे। अर्ध– मध्यम किसानों का पारिवारिक बनावट संयुक्त होती है। ये कृषि कार्य को स्वयम करते है, सही समयों पर कृषि फसलों की बुआई कटाई तथा निराई एवम् सिंचाई का कार्य करते है जिसका परिणाम कृषि फसलों का उत्पादन व उत्पादकता अधिक होता है। जब कृषि फसलों का उत्पादन अधिक होता है तो किसानों की बचत बढ़ेंगे, उनके पास पूँजी का संचयन होगा और वे कृषि तकनीकों का क्रय करने के लिए प्रोत्साहित होंगे कृषि में निवेश को बढ़ाएंगे जिससे कृषि का विकास होगा।

कृषि योग्य भूमि के जोतों का आकार में जब तक असमानता कम नही होगा तब तक टिकाऊ कृषि प्रणाली अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ नही किया जा सकता है। बड़े किसानों के पास उनके समर्थता से अधिक भूमि उपलब्ध है तथा कुछ किसानो के पास बहुत छोटे– छोटे जोतों का आकार उपलब्ध है जिसपर कृषि कार्य करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जब तक कृषि योग्य भूमि के जोत की आकारिता एवम् समर्थता में संतुलन नही होगा तब तक कृषि फसलों का पैदावार (उत्पादकता) नही बढ़ सकता है। आकारित एवम् समर्थता को संतुलन में किए

बगैर एक टिकाऊ कृषि प्रणाली अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ नही किया जा सकता। खासकर ये बातें बिहार में प्रभावी रूप से महत्वाकांक्षी योजना के तहत् करनी होगी, क्योंकि बिहार में कुछ वैसे कृषक है, जिनके समर्थता से अधिक आकारिता की भूमि पर उनका स्वामित्व है। ठीक इसके विपरीत कुछ ऐसे किसान है जो समर्थता से कम जोत के आकार पर अधिकार है। इस प्रकार से जोतों के आकार के संबंध में असंतुलन की स्थिति को सबसे पहले संतुलित करना होगा तभी एक टिकाऊ कृषि प्रणाली अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है।

- ***निष्कर्ष* (Conclusion)*:–***

इस शोध अध्ययन में अभी तक जितने भी प्राथमिक डेटा का संग्रह एवम् विश्लेषण किया है, उन सभी प्राथमिक डेटा को चित्र संख्या 01 में दर्शाया गया है। इस चित्र से स्पष्ट हो रहा है कि एक निशचित सीमा से अधिक कृषि योग्य भूमि के जोत का आकार अधिक होने से उत्पादन व उत्पादकता निम्न स्तर का होता है। ठीक इसके विपरीत सीमान्त किसान जिनके पास कम भूमि उपलब्ध रहता है, खाद्यान्न फसल गेहूँ का उत्पादन व उत्पादकता प्रति हेक्टेयर में कम (सीमित) मात्रा में उत्पादन कर रहे है।

परन्तु इन दोनों के बीच अर्ध– मध्यम जोत वाले किसान (2–4 हेक्टेयर) अधिक उत्पादन व उत्पादकता प्रति हेक्टेयर में कर रहा है। इसका सबसे मुख्य वजह है कि अर्ध– मध्यम किसान कृषि कार्यो में निवेश उत्साहपूर्ण करते है तथा साथ ही साथ कृषि तकनीको का उपयोग सुगमता पूर्वक करते है। श्रमशक्ति का भी उपयोग कृषि कार्यो में करते है। कृषि संबंधी कार्य स्वयं करते है। मिश्रित व गहन कृषिफसलो को उगाते है, जिससे उत्पादन व उत्पादकता अधिक होता है।

सामर्थ से कम स्वामित्व वाली भूमि रहने पर वह किसान उत्साहपूर्वक कृषि कार्य नही करते है, जिससे उत्पादन का स्तर निम्न रहता है। दूसरा पक्ष सामर्थ से अधिक जोत का आकार रहने पर बड़े किसान कृषि कार्य को करने में सामर्थ नही हो पाते है, इसलिए उत्पादन का स्तर निम्न रहता है।

सामर्थता से अधिक जोत वाले किसाने, बड़े आकर में कृषि कार्य को करने में समर्थ नही हो पाते है, इसलिए उत्पादन का स्तर निम्न ही रहता है। आवश्यकता से अधिक जोतवाले किसान के पास दो बड़ी समस्या है:–

- *पहला वित्त की समस्या।*
- *दुसरा मॉनसून के साथ जुँआ की समस्या।*

इस जोखिम से बचने के लिए अपनी आवयकता एवम् सामार्थता के अनुसार जोत के आकार पर कृषि फसल उगाते है। शेष भूखण्ड को बँटाई/ पट्टे पर कभी – कभी पड़ति भी छोड़ देते है। क्योंकि वे हमेशा मॉनसून की जोखिम से बचने के लिए ऐसा करते है।

प्रति एकड़ में उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सबसे पहले कृषि संबंधि नितियाँ बनाने के समय सबसे पहले भूमि सुधार का कार्य एक महत्वाकांक्षी योजना के तहत् कार्य करना होगा, तभी प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में वृद्धि संभव हो सकेगा।

राज्य सरकार को सबसे पहले:–

- ***सुझावः–***
  - *भूमि सीमा का निर्धरण करना होगा।*
  - *सीमा से अधिक भूमि को सरकार अपने अधिकार में लेकर गरीब व भूमिहीन मजदूर किसानों के बीच वितरण करना होगा।*
  - *कृषि कार्य संबंधी वित्त की सुविधा सुलभ प्रक्रिया के तहत् करनी होगी।*
  - *अर्ध– मध्यम (2–4) तक की सीमा तक जोत का आकार तक का प्रयास करना चाहिए।*

- ***संदर्भग्रंथ सूचि (*BIBIOGRAPHY*):–***

सेन0ए0के0 (2011) economic and political weekly

फोस्टर ऍंडयू (2022) economic and political weekly izdk'ku Indian journal of Agricultural economy.

भोजन नीति वाल्यूम 106 जनवरी 2022, 102168

लाल एवम् निवेदिता और नन्द चैतन्य (2011) खण्ड–2, अंक–4

NCA, *1976 पृष्ट सं0 67*

अनुरॉय और राजपुत तृप्ति (2011) Indian Journal of Agricultural Economy *खण्ड–16, अंक–1*

खेत के आकार एवम् उत्पादकता के बीच संबंधो की खोज– भारतीय खेतों से साक्ष्य खण्ड–60, संख्या–2 (2022) सामग्री।

रॉय अनामित्रा Concept research foundation Article jaunary *2017*

आश्रितआर राधा खण्ड– 60, संख्या 2 (2022) सामग्री।

बर्धन पी0के0 (1973) आकार उत्पादकता और पैमाने पर रिर्टन भारतीय कृषि में खेत – स्तरीय डेटा का विश्लेषण Journal of Political economy 81 (6) *1370.13861*

बैरेट सीबी बेलेमेरे,एमएफ और होऊ जेवाई (2010)

Sen, R. K. (2011). *[Article]*. *Economic & Political Weekly*.

Foster, A. (2022). *[Article]*. *Economic & Political Weekly*. (Also published in *Indian Journal of Agricultural Economy*.)

Food Policy. (2022, January). *[Article]*, **106**, 102168.

Lal, R., & Nivedita, & Chaitanya, N. (2011). *[Article]*. *[Journal Name]*, **2**(4).

National Commission on Agriculture. (1976). *Report of the National Commission on Agriculture* (p. 67). Government of India.

Bansal, A., & Rajput, V. (2011). *[Article]*. *Indian Journal of Agricultural Economy, 16*(1).

Search for the relationship between farm size and productivity: Evidence from Indian farms. (2022). *Radha Khand, 60*(2).

Animesh, S. (2017, January). *[Article]*. Concept Research Foundation.

Aashish, R. (2022). *[Article]*. *Radha Khand, 60*(2).

Bardhan, P. (1973). Size, productivity, and returns to scale: An analysis of Indian farm-level data. *Journal of Political Economy, 81*(6), 1370–1386.

Berry, A. R., Levinsohn, J., & Pakes, A. (2010). *[Work on productivity and firm dynamics]*.